इकाई 11 नवीन प्रजननीय तकनीक तथा नातेदारी

इकाई की रूपरेखा

संरचना

11.0 उद्देश्य

11.1 परिचय

11.2 नातेदारी अध्ययन में नवीन प्रजननीय तकनीकों को समझना

11.2.1 नवीन प्रजननीय प्रौद्योगिकी (एनआरटी) क्या है?

11.2.2 नातेदारी अध्ययन के केन्द्र–बिंदु में परिवर्तन

11.2.3 मातृत्व तथा प्रजनन के अभिप्राय को पुर्नपरिभाषित करना

11.3 एनआरटी (नई प्रजननीय प्रौद्योगिकी) के माध्यम से नातेदारी को समझनाः इजराइल के संदर्भ में

11.3.1 प्रौद्योगिकी के माध्यम से मातृत्वसुख प्राप्त करना

11.3.2 मातृत्व, पहचान तथा राष्ट्र

11.3.2 इजराइल में नवीन प्रजननीय प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के उपयोग से उत्पन्न चिंताएं

11.4 नवीन प्रजननीय प्रौद्योगिकी (एनआरटी) की सामाजिक प्रासंगिकता

11.4.1 प्रौद्योगिकी तथा पितृसत्ता

11.4.2 प्रौद्योगिकी पर महिलाओं की बढती पहुंच तथा नियंत्रण

11.4.3 'पसंद के अनुसार परिवार' के गठन की अनुमति संभव होना

11.5 परिवार तथा नातेदारी पर नवीन प्रजननीय प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के नकारात्मक प्रभाव

11.6 सारांश

11.7 संदर्भ

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्नांकित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

• नई प्रजनन तकनीकों या एनआरटी पर विचार–विमर्श करना

• यह समझने का प्रयास करना कि किस प्रकार से एनआरटी के कारण नातेदारी की पूर्व प्रचलित परिभाषाओं में परिवर्तन हो रहा है।

• एनआरटी किस प्रकार से मातृत्व/पितृत्व के अर्थ को परिवर्तित कर रहा है, व्याख्या करना।

• फर्टिलिटी क्लीनिक के संदर्भ में एनआरटी के प्रयोग का परीक्षण करना

• समाज में एनआरटी के अभिग्रहण पर टिप्पणी करना।

11.1 परिचय

प्रजननीय तकनीक में नवाचार नातेदारी की केंद्रीय अवधारणाओं के अर्थ में बदलाव ला रहे है जैसे मातृत्व, पितृत्व तथा व्यक्तित्व। नवीन प्रजनन तकनीकों के परिणामस्वरूप, नातेदारी के जैविक तथा सामाजिक आधार के बीच की सीमाएँ धुंधली हो गई हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसने जन्म देने की क्रिया में क्रांति ला दी है। जन्म अब केवल एक जैविक घटना नहीं है बल्कि एक सामाजिक घटना है क्योंकि यह संबंध बनाती है। प्रजनन प्रौद्योगिकियां पहले से चली आ रही नातेदारी के सांस्कृतिक निर्माण को चुनौती देती हैं तथा नए प्रकार के सामाजिक संबंधों को लाती हैं, जिसमें नातेदारी की सीमाओं को पुर्नपरिभाषित किया जाता है। इस इकाई में, हम नई प्रजनन तकनीक का पता लगाएंगे तथा किस प्रकार से इसके द्धारा प्रजननीय कार्य में परिवर्तन आया है जिससे प्रजनन, मातृत्व तथा संतान के अर्थ को समझने की अनुमति मिलती है।

अपने पहले खंड में हम कोशिश करेंगे और समझेंगे कि नई प्रजनन तकनीकें (एनटीआर) क्या हैं। एनआरटी के विकास ने परिवार के गठन के लिए मार्ग प्रशस्त किया तथा जीव विज्ञान से परे पुनरुत्पादन की संभावना में वृद्धि हुई।

इसने परिवार और नातेदारी की सांस्कृतिक समझ को जन्म दिया है। इसलिए, हमारे बाद के खंडों में हम इस बात की जांच करेंगे कि जैविक आधार पर आधारित नातेदारी की कुछ मान्य धारणाओं को कैसे नकार दिया गया है। इसके बाद के अनुभागों में हम फर्टिलिटी क्लीनिकों की प्रकृति और उनकी स्वीकृति या अस्वीकृति तथा एनटीआर के लाभ तथा हानि के पक्षों को समझने का प्रयास करेगें।

11.2. नातेदारी के अध्ययन में नवीन प्रजननीय तकनीकों (एनआरटी) को समझना

प्रजननीय प्रौद्योगिकियां उन लोगों के लिए आशा की किरण हैं जो प्राकृतिक गर्भाधान की प्रक्रिया से बच्चे पैदा करने में असमर्थ हैं या परिवार स्थापित करने के लिए जैविक गर्भाधान के अलावा अन्य साधनों का चयन करते हैं। पूर्व के उदाहरणों में विवाहित बांझ जोड़े शामिल हैं, जबकि बाद वाले में समलैंगिक समुदाय तथा एकल पितृत्व का लक्ष्य रखने वाले शामिल हैं। इस प्रकार, प्रौद्योगिकी प्रजनन तकनीकों के प्रभाव में परिवार, पितृत्व, लिंग भूमिका तथा नातेदारी अध्ययन के भीतर विवाह की धारणाओं को बदल रही है। एनआरटी ने स्पष्ट कर दिया है कि वंश तथा गठबंधन ही नातेदारी गढ़ने का आधार नहीं है।

जबकि एनआरटी प्रजनन संबंधी चुनौतियों के बावजूद जैविक नातेदारी को आगे बढ़ाने की संभावना का सीमांकन करता है, क्या इन्हें नातेदारी संबंधों के रूप में मान्यता दी जा सकती है, यह एक अधिक जटिल प्रश्न है। उनकी स्वीकृति उन समाजों में समान नहीं रही है जहाँ उनका अभ्यास किया जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विभिन्न संस्कृतियों में गर्भधारण के तरीके के आधार पर संतान को समाज के वैध सदस्य के रूप में शामिल करने के लिए कठोर नियम भिन्न–भिन्न होते हैं। वही कुछ समाज केवल जैविक माता–पिता से संबंधित प्रजनन पर जोर देते हैं, जबकि अन्य तकनीकी नवाचार को अधिक आसानी से शामिल करते हैं, जिससे गर्भधारण और बच्चे के जन्म की प्रक्रिया में बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी को स्वीकार किया जाता है। जैविक माता–पिता के अलावा, चिकित्सक तथा राज्य इस प्रजनन प्रणाली का हिस्सा बन जाते हैं।

सामाजिक मानदंड जो वर्ग, जातीयता, नस्ल, जाति, धर्म आदि के संदर्भ में उनकी कथित असमानता के कारण कुछ समूहों के बीच वार्तालाप को प्रतिबंधित

करते हैं, उन चिकित्सा प्रक्रियाओं को नहीं लेते हैं जो रोगियों और दाताओं के संबंध में इन विचारों की अनदेखी करते हैं। वे समाज जो एनआरटी के उपयोग की अनुमति देते हैं, वे नैतिक और धार्मिक संहिताओं के खंडित होने से बचाने के लिए सख्त जाँच तथा नियंत्रण सुनिश्चित करते हैं।

प्रजननीय प्रौद्योगिकियां कोई नई घटना नहीं हैं – दुनिया की पहली टेस्ट ट्यूब बेबी लुइसा ब्राउन का जन्म 1978 में यूके में हुआ था। लेकिन इन प्रक्रियाओं का विकास जैव आनुवंशिकी के अंर्तगत एक विशेष शाखा के रूप में बांझपन को सुधारने या नियंत्रित करने के लिए हाल ही में हुआ है। प्रजनन प्रौद्योगिकियां जैव प्रौद्योगिकी के विकास का परिणाम हैं। इसने प्रकृति से चुनने के लिए एक बदलाव को चिह्नित किया, जो कि जीव विज्ञान से अन्यथा बाधित होने वालों के लिए पितृत्व की संभावनाओं को खोल रहा है। उदाहरण के लिए, बांझपन, समान लिंग वाले जोड़े या एकल, तलाकशुदा, विधुर/विधवा, अर्थात् यौन साथी विहीन वाले। एनआरटी के विकास ने परिवार के गठन के लिए मार्ग प्रशस्त किया तथा जीव विज्ञान से परे पुनरुत्पादन की संभावना में वृद्धि हुई। इसने परिवार तथा नातेदारी की सांस्कृतिक समझ को जन्म दिया है।

11.2.1 नई प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) क्या है?

नई प्रजननीय तकनीक उन प्रौद्योगिकियों को संदर्भित करती है जो प्रजनन के जैविक कार्य में हस्तक्षेप करती हैं। यह जन्म, गर्भनिरोधक, गर्भपात तथा प्रसवपूर्व परीक्षण सहित प्रजनन की प्रक्रिया में सुविधा, रोकथाम या हस्तक्षेप कर सकता है। एनआरटी को सहायक प्रजनन भी कहा जाता है।

एनआरटी को तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया हैः (जेरी, डेविड और जूलिया जरी, 2000:515)

अ) **प्रबंधकीय प्रौद्योगिकियां,** जिसमें गर्भावस्था से पहले, गर्भावस्था तथा जन्म का प्रबंधन शामिल है।

ब) **गर्भनिरोधक प्रौद्योगिकियां,** जो गर्भनिरोधक या कंडोम की तरह गैर–हस्तक्षेपवादी हो सकती हैं, या इसमें हार्मोन दमन, अंतर्गर्भाशयी उपकरणों तथा नसबंदी का उपयोग शामिल है।

स) **कल्पनक गर्भाधान,** कृत्रिम वीर्यसेचन, सरोगेसी (स्थानापन्न मातृत्व), प्रजननक्षमता वर्धक दवाएं, तथा इन–विट्रो निषेचन सहित संकल्पनात्मक प्रौद्योगिकियां।

एनआरटी को समझने के लिए सबसे प्रमुख संदर्भ इन–विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) है। इस प्रक्रिया में प्रजनन की संभावनाएं उत्पन्न करने के लिए अंडे को एक महिला के अंडाशय से शल्य चिकित्सा द्वारा हटा दिया जाता है तथा दूसरी महिला के गर्भ में स्थानांतरित कर दिया जाता है। एनआरटी न केवल एक चिकित्सा उपकरण है, बल्कि एक संस्था भी है जो ''अभिभावकता के निर्माण की अनुमति देती है, इस प्रकार यह वंशवृद्धि के नए रूपों को रास्ता देती है।(हर्टियर 1985) । व्यक्तियों के लिए प्रजनन विकल्प उपलब्ध कराने के लिए एनआरटी को मानव, मशीन तथा चिकित्सा पेशेवर के हस्तक्षेप की आवश्यकता है। प्रजनन में तीसरे पक्ष की अंतर्निहित आवश्यकता ने नातेदारी की समझ को प्रभावित किया है।

11.2.2 नातेदारी अध्ययन के केंद्र–बिंदु में बदलाव

1970 के दशक में उभरे सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने नातेदारी संबंधों की अस्थिरता तथा निरंतर–परिवर्तित होने वाली प्रकृति पर जोर दिया। हाल के वर्षों में, इन परिवर्तनों को जैव प्रौद्योगिकी आधारित प्रजनन प्रक्रियाओं के विकास से आगे बढ़ाया गया है। ये नए आयाम जोड़ रहे हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में नातेदारी को अलग तरह से कैसे समझा जाता है। परिवार अब केवल जैविक नहीं रह गया है, बल्कि आनुवंशिकी तथा प्रौद्योगिकी द्वारा भी परिभाषित किया गया है। माता–पिता बनने का अनुभव करने के लिए शादी अब एक मजबूरी के स्थान पर एक विकल्प है।

एनआरटी दिखाता है कि मातृत्व और पितृत्व की शर्तों का अर्थ किस तरह से विभिन्न समाजों में इनकी अवधारणा पर निर्भर करता है। वे दोनों सामाजिक संरचना हैं, विशेष रूप से नई प्रजनन तकनीकों के संदर्भ में। इन तकनीकों के उपलब्ध होने से पहले प्रकृति के तथ्यों को नकारा नहीं जा सकता था। निषेचन, गर्भधारण तथा प्रसव को पृथक नहीं किया जा सकता था। एनआरटी ने गर्भधारण की अवधारणा को जन्म से अलग कर दिया है। इसने न केवल बच्चे का पिता कौन है बल्कि बच्चे की मां कौन है (पहले मातृत्व स्पष्ट था, हालांकि

पितृत्व संदिग्ध हो सकता था) पर भी सवाल उठाया है। अगर अंडा एक मां का है तथा गर्भ दूसरी मां का है तो प्रश्न उठता है कि आनुवंशिकी कौन है।

डेविड श्नाइडर , इस तथ्य को चुनौती देने का मार्ग प्रशस्त करने वाले प्रमुख विद्वानों में से एक हैं, जिन्होंने विभिन्न समाजों के आख्यानों को शामिल किया। नातेदारी की निश्चित तथा स्थिर धारणाओं से नातेदारी का ध्यान हटाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जैसा कि कार्य, सामाजिक संरचना तथा नियमों द्वारा परिभाषित किया गया है, लोगों के दृष्टिकोण से सांस्कृतिक विविधताओं के आधार पर भिन्नता पर विचार करने के लिए, जैसा कि उन्होंने अपने दैनिक जीवन में नातेदारी संबंधों का अनुभव किया।

अमेरिकी रिश्तेदारी का अध्ययन करते समय, श्नाइडर के विचार नातेदारी में अस्थिरता को दर्शाते हैं जिसकी उन्होंने स्वयं वकालत की थी। उन्होंने कहा कि नातेदारी 'साझा जैव–आनुवंशिकी पदार्थ' तथा 'स्थायी विसरित एकात्मकता' के विचारों पर आधारित थी। उनके अनुसार, अमेरिकी संदर्भों में परिवार पर चर्चा में जीव विज्ञान का एक प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में कोई आवश्यक संबंध नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक निर्माण के लिए था तथा अनिवार्य रूप से प्रतीकात्मक थे। 'अमेरिकी सांस्कृतिक अवधारणा में, नातेदारी को जैव–आनुवंशिकी के रूप में परिभाषित किया गया है। यह परिभाषा कहती है कि नातेदारी जैव आनुवंशिक संबंध है। यदि विज्ञान जैव–आनुवंशिकी के विषय में नए तथ्यों की खोज करता है, तो यही नातेदारी है तथा सर्वदा थी, हालांकि उस समय यह ज्ञात नहीं हो सकता था '(श्नाइडर 1980: 23)।

श्नाइडर नातेदारी को पुर्नपरिभाषित करने में एक स्थान के रूप में जैव–आनुवंशिकी प्रौद्योगिकी में नवाचारों के लिए स्थान बनाते है। जिस तरह से संबंधों को नातेदार के रूप में पहचाना जाता है और तदनुसार समय के साथ पोषित किया जाता है, वह केवल जैविक कडी पर आधारित नहीं होना चाहिए। पितृत्व जैविक प्रजनन तक ही सीमित नहीं है। गोद लेने, पालक देखभाल जैसे विकल्प विभिन्न समाजों में समय तथा स्थान पर हमेशा मौजूद रहे हैं। लेकिन इन विकल्पों से गायब जैव–आनुवंशिकी कडी उन्हें जाति, नस्ल, जातीयता तथा धर्म के सामाजिक मापदंडों के अंदर रक्त के संबंध पर जोर देने वाले समाज की नजर में एक समझौता जैसा लगता है। तकनीकी प्रजनन में कुछ प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त माता–पिता के अतिरिक्त अन्य

लोगों के साथ जैव–आनुवंशिकी संबंध होते हैं, लेकिन ऐसे मामलों में जैविक कारक का योगदान करने वाले व्यक्ति को पितृत्व से वंचित किया जाता है।

मर्लिन स्ट्रैथर्न के अनुसार, प्रौद्योगिकी के स्थान पर सामाजिक विचारों पर कम ध्यान दिया जा रहा है, प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग का अर्थ है पितृत्व पर कानून के माध्यम से सामाजिक हस्तक्षेप में वृद्धि (कार्स्टन, 2000: 10)। प्रजनन अब व्यक्तिगत दायरे में नहीं रहता है। इसे राज्य, चिकित्सा अधिकारियों तथा विधायी तंत्र से अनुमति के साथ नियंत्रित और स्वीकृत किया जाता है।

11.2.3 मातृत्व तथा प्रजनन के अर्थ को पुर्नपरिभाषित करना

प्रजननीय तकनीकों ने मातृत्व के विषय में हमारे सोचने के तरीके को बदल दिया है। इससे पहले, मातृत्व को सांस्कृतिक तथा कानूनी रूप से एक एकल परिवार संरचना के आधार पर आनुवंशिक नातेदारी दावों के माध्यम से स्थापित के रूप में देखा जाता था। आज प्रजननीय प्रौद्योगिकियों ने मातृत्व के एक नए वैधीकरण को अनुमति दी है तथा इस तरह मातृत्व के दायरे में व्यापक संभावनाओं को शामिल करने की अनुमति दी है जो अब साधारण जैविक दावों तथा पारंपरिक एकल परिवार मॉडल पर निर्भर नहीं है।

यह आदर्श परिवार मॉडल को चुनौती देता है तथा मातृत्व की सामाजिक समझ को परिवर्तित करता है क्योंकि ''माँ'' में एक डिंब दाता या एक सरोगेट शामिल हो सकता है, या दो पिता या दादी हो सकते हैं, या इच्छित माता–पिता की तुलना में अधिक प्रतिभागियों को शामिल कर सकते हैं। यह स्पष्ट है इसलिए, मातृत्व को अब केवल बच्चे पर जन्म के अधिकार के आधार पर परिभाषित नहीं किया जा सकता है।

एक जैविक घटना के रूप में मातृत्व की उत्पत्ति को अक्सर डिंब से संबंधित प्रौद्योगिकियों के विकास के साथ चुनौती दी जाती है। मातृत्व की जैविक भूमिकाओं को आनुवंशिक (अंडे) और गर्भावस्था (गर्भ) में विभाजित करके, ये नई प्रौद्योगिकियां मातृत्व के वैचारिक विखंडन को भी विवश करती हैं। जैसे ही एक महिला के अंडाशय से अंडे को शल्य चिकित्सा द्वारा हटा दिया जाता है और

दूसरी महिला के गर्भ में स्थानांतरित कर दिया जाता है, प्रजनन संभावनाएं पैदा हो जाती हैं।

1 बोध प्रश्न

1. नई प्रजनन प्रौद्योगिकियां क्या हैं?

.....

.....

.....

2. इन विट्रो फर्टिलाइजेशन या आईवीएफ क्या है?

.....

.....

.....

.....

11.3 नई प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के माध्यम से नातेदारी को समझना: इजरायल के संदर्भ में

सुसान मार्था कहन ने अपने लेखनकार्य, *'एग्स एंड वॉम्ब्स: द ओरिजिन्स ऑफ ज्यूईसनेस'* में एनआरटी विषय के साथ ही एनआरटी ने कैसे नातेदारी की छवि को पुर्नकल्पित करने के लिए प्रेरित किया है, के प्रकरण पर प्रकाश डाला है । इनका लेखनकार्य इजराइल में प्रजनन क्लीनिक के नृवंशविज्ञान अध्ययन पर आधारित है। इजराइल में दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में अधिक प्रजनन क्लीनिक हैं तथा इन–विट्रो निषेचन प्रक्रियाओं की प्रति व्यक्ति दर दुनिया में सबसे अधिक है। ये घटनाएं इजराइल में बांझपन की असामान्य रूप से उच्च दर का परिणाम नहीं हैं बल्कि यहूदी धर्म तथा यहूदी संस्कृति में प्रजनन की केंद्रीयता को दर्शाती हैं।

यह अध्ययन एक छोटे से धार्मिक यहूदी अस्पताल में किया गया था जिसमें अति–रूढ़िवादी यहूदी, मुस्लिम तथा ईसाई शामिल थे, जहां प्रत्येक प्रक्रिया को

यहूदी कानून के दायरे में सावधानी से किया जाता था, इस प्रकार इस 'अस्पताल' को धार्मिक बना दिया जाता था। अन्य अस्पतालों के विपरीत यहां कोई भी कैफेटेरिया, रोगी लाउंज के स्थान पर प्रार्थना की पुस्तकों के बुककेस को देखा जा सकता है। अस्पताल में प्रक्रियाओं को हलखा (यहूदी कानून और न्यायशास्त्र, तल्मूड पर आधारित) के विचार के साथ किया गया था। इजराइल में एनआरटी के विषय में मार्था कान के अध्ययन में दर्शाया गया है कि कैसे स्थानीय दृष्टिकोण, चिकित्सा समुदाय के प्रयासों, सहायक सरकारी नीतियों तथा रब्बी समुदाय के विश्वासों ने इस तकनीक को प्राप्त करने तथा नातेदारी के नए अर्थों को शामिल करने के तरीके को प्रभावित किया है।

11.3.1 प्रौद्योगिकी के माध्यम से मातृत्वसुख की प्राप्ति

डॉक्टर ने कान से कहा ''क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? हम उसे माँ बना रहे हैं!'' इस टिप्पणी के साथ डॉ. बेंजामिन ने ऑपरेटिंग रूम के चिकित्सा क्षेत्र तथा नातेदारी के प्रतीकात्मक क्षेत्र के बीच संबंध बनाया। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस तकनीक ने माताओं को बनाने का एक नया तरीका बनाया, मातृत्व की शुरुआत के लिए एक नया मूल मिथक, जो कि यह था। अब कुछ माताएं ऐसी हैं जिन्हें डॉक्टर मातृत्व की तकनीकी रचना करते है। (काह्न, 2004: 369)।

तकनीकी प्रगति के माध्यम से नातेदारी का पुनर्निर्माण किया जाता है, जो कि लोगों को उनकी यहूदी पहचान के पुनर्निर्माण तथा समूह की निरंतरता सुनिश्चित करने में मदद कर रहा है। इजराइल में यहूदी समुदाय के धार्मिक सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और समाज के बीच संतुलन को सावधानीपूर्वक बनाए रखना होगा। नई प्रजनन तकनीक के उपयोग के साथ, इजरायल की संस्कृति ने धार्मिक कानूनों की अवहेलना किए बिना जैविक गर्भाधान में प्रौद्योगिकी के उपयोग को अपनाया है। गर्भाधान से जुड़ी सभी धार्मिक मान्यताओं को कायम रखते हुए चिकित्सा प्रक्रियाएं की जाती हैं, यानी मातृत्व प्रदान करने में विज्ञान तथा धर्म के बीच सावधानीपूर्वक संतुलित सह–अस्तित्व विद्यमान रहता है। यदि धार्मिक संहिता की अनदेखी की जाती है, तो प्रक्रियाओं को रोका जा सकता है। यह भावी मां के लिए, बच्चे के लिए एक नागरिक के रूप में स्वीकृति प्राप्त करने के लिए, डॉक्टर की प्रतिष्ठा के लिए और इस प्रकार समग्र रूप से समुदाय के विकास के लिए हानिकारक होगा।

11.3.2 मातृत्व, पहचान तथा राष्ट्र

इजराइल में, मातृत्व धार्मिक कानूनों के दायरे में रहता है क्योंकि यह न केवल नातेदारी के संदर्भ में, बल्कि धार्मिक समूह के भीतर किसी की सदस्यता और नागरिकता के अधिकार को भी परिभाषित करता है। यहूदीपन एक राष्ट्र से संबंधितता और नागरिकता के अधिग्रहण को निर्धारित करता है। नातेदारी की पहचान को मातृवंशीय रूप से परिभाषित किया जाता है, यदि बच्चे को वैधता प्रदान की जानी है तो मां की पहचान महत्वपूर्ण हो जाती है।

चूंकि नागरिकता तथा पहचान मातृत्व से निकटता से जुड़ी हुई है, इसलिए एनआरटी के उपयोग सहित धार्मिक संहिताओं के तहत दिए गए नियमों के तहत प्रजनन को बारीकी से प्रबंधित किया जाता है। एनआरटी का उपयोग सुचारू रूप से नहीं होता है। ऐसी आलोचनाएं हैं कि ऐसी प्रौद्योगिकियां मातृत्व की उत्पत्ति के विषय में पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देती हैं। रब्बी असमंजस में हैं कि क्या अंडे के आनुवंशिक पदार्थ, गर्भ के तथा गर्भावस्था के वातावरण या दोनों में मातृत्व का पता लगाया जाए। ये बहसें नए यहूदी नागरिकों के गर्भाधान के लिए उपयुक्त नियम निर्धारित करती हैं क्योंकि महिलाओं के शरीर के संबंध में हलाखिक कानून का नैदानिक प्रोटोकॉल पर प्रभाव पड़ता है।

मिश्रित प्रजनन, शरीर से अंडे निकालने, अंडे तथा शुक्राणुओं को निषेचित करने तथा भ्रूण को महिलाओं के गर्भ में डालने की सभी प्रक्रियाओं में 'यहूदीपन' देखा गया। फर्टिलिटी क्लिनिक का धार्मिक रंग होता है तथा यह यहूदी पहचान के निर्माण में मदद करता है। क्लिनिक को धार्मिक माना जाता है क्योंकिः

1. सभी उपचार तथा प्रक्रियाएं यहूदी कानून के सावधानीपूर्वक विचार के तहत की जाती हैं।

2. प्रतीक्षा क्षेत्र में प्रार्थना पुस्तकों से भरी किताबों की अलमारी के साथ समायोजन दिखावटी नहीं है।

3. क्लिनिक में काम करने वाले कर्मचारियों को मस्कगिचोट ———हलाखिक निरीक्षकों द्वारा बारीकी से परीक्षण, निगरानी तथा पर्यवेक्षण किया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पिछली प्रक्रिया से एक ही सिरिंज, सूक्ष्म नालिका या कैथेटर के उपयोग के कारण शुक्राणु तथा अंडे का मिश्रण नहीं होता

है, जो किसी अन्य की आनुवंशिक सामग्री के पदार्थ को ले जा सकते हैं। ये निरीक्षक अपने कार्य को ''पवित्र कार्य'' मानते हैं।

4. हलखा धार्मिक कानून के अनुसार, केवल प्रजनन समस्याओं वाले विवाहित जोड़े ही उपचार का लाभ उठा सकते हैं। अविवाहित महिलाओं के लिए यह विकल्प नहीं है।

5. रोगी के चिकित्सा विवरण के साथ फ्लोचार्ट। उनमें हार्मोनल उपचार, रक्त परीक्षण, तापमान, अल्ट्रासाउंड परिणाम तथा मिकवेह में विसर्जन की तारीख की रिपोर्ट शामिल हैं ––– पवित्रता की स्थिति सुनिश्चित करने तथा अशुद्धता से बचने के लिए किए गए अनुष्ठान स्नान या पति के साथ यौन संबंध बनाने की प्रक्रिया से पूर्व महिला की ''निदाह'' की स्थिति महत्वपूर्ण होती है। यह गर्भाधान के संबंध में हलाखिक चिंताओं के लिए भी महत्वपूर्ण है।

मातृत्व का निर्धारण करने के लिए अलग–अलग भत्ते विशेष रूप से इजराइल में नातेदारी निर्धारित करने में एक समस्या पैदा करते हैं, जहां धार्मिक पहचान मातृवंशीय रूप से निर्धारित होती है तथा स्वचालित रूप से नागरिकता प्रदान करती है।

11.3.2 इजराइल में नई प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के उपयोग से उत्पन्न चिंताएं

इजराइली समाज में एक उभरता हुआ अंतर्विरोध है, जो एक ओर, समाज में महिलाओं की स्थिति के लिए मातृत्व को परिभाषित करने वाले कारक के रूप में प्राथमिकता देता है और दूसरी ओर हलाखिक कानूनों के दायरे में गर्भाधान की अपेक्षाओं को लागू करके संतानों को वैध बनाने की शर्तें रखता है।

एनआरटी के उपयोग की अनुमति सख्त निगरानी तथा धार्मिक कानूनों के समर्थकों द्वारा बारीकी से जांच के उपरान्त दी जाती है। जो लोग एनआरटी के उपयोग का विकल्प चुनते हैं उन्हें प्रक्रिया से गुजरने के लिए अनुमति की आवश्यकता होती है। एनआरटी प्रक्रिया की कौन कर सकता है, इसकी सीमाएँ हैं। किसके अंडे तथा किसके गर्भ के संबंध में मातृत्व के प्रश्न और इस प्रकार जन्म लेने वाले बच्चे की 'असली' मां कौन है, ऐसी चुनौतियां हैं जो अनसुलझी हैं तथा एनआरटी की नकारात्मक छवि में योगदान दे रही हैं। प्रक्रिया के दौरान

जिन धार्मिक मापदंडों का कड़ाई से पालन करने की आवश्यकता हो सकती है ––– सभी इस प्रक्रिया को चुनने वाले जोड़े पर समाज के दबाव को दर्शाते हैं।

सीमाओं की छलयोजनाः पारंपरिक हलाखिक विचारों के तहत धार्मिक कोड के व्यापक ढांचे के अंर्तगत सर्जिकल प्रोटोकॉल में शुद्धता–अशुद्धता के विषय में अनदेखी, सीमाओं के साथ हेर–फेर के लिए अत्यधिक संभावना है। उदाहरण के लिए, डॉक्टर पर अपनी इकाई में आईवीएफ गर्भधारण की संख्या बढ़ाने का दबाव हो सकता है जिससे ग्राहकों को व्यवसाय चलाये रखने के लिए सुनिश्चित किया जा सके। डॉक्टर आईवीएफ प्रक्रिया के दौरान रक्तस्राव के स्रोत के विषय में कम जानकारी दे सकते हैं। इलाज करा रही एक मरीज अपने रब्बी को स्वेच्छा से ऐसी जानकारी नहीं देना चाहेगी जो उसके इलाज पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। एक रब्बी संतानहीनता से पीड़ित महिला को अनुमति देना चुन सकता है। यह भी संभव है कि रब्बी अपनी स्वयं की व्याख्या तैयार करें कि किसे माँ के रूप में पहचाना जाना चाहिए। डिंब–संबंधित तकनीक द्वारा मातृत्व के निर्धारण को स्पष्ट रूप से अस्थिर कर दिया गया है। फिर भी इस तकनीक को पारंपरिक रूढ़िवादी मान्यताओं के लिए एक चुनौती के रूप में नकारात्मक अर्थों में नहीं देखा जाता है। यह स्पष्ट है कि मातृत्व प्राप्त करने की इच्छा आधुनिक तकनीक के विषय में अवरोधों को दूर करने में मदद करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो रूढ़िवादी यहूदी धार्मिक विश्वासों से उभरी हो सकती है।

2 बोध प्रश्न

1. चर्चा करें कि किस प्रकार इजरायल में नागरिकता तथा पहचान, मातृत्व से निकटता से संबंधित है।

.....

.....

.....

2. इजराइल में फर्टिलिटी क्लीनिकों के सामने आने वाली किन्हीं दो चुनौतियों का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

11.4 नई प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) की सामाजिक प्रासंगिकता

प्रजननीय प्रौद्योगिकियों में प्रगति के साथ, एक जैविक परिवार स्थापित करने की आकांक्षा को बांझपन तथा बंध्यता की समस्याओं के कारण समझौता नहीं करना पड़ता है। घर के व्यक्तिगत या घरेलू क्षेत्र की विशेषता के रूप में प्रजनन के क्षेत्र को नारीवादी विचार ने चुनौती दी थी। नारीवादियों ने पुरुष/महिला, मन/शरीर, संस्कृति/प्रकृति, उत्पादन/प्रजनन के बीच गलत लेकिन स्वीकृत द्विगुण पर ध्यान आकर्षित किया है।

11.4.1 प्रौद्योगिकी तथा पितृसत्ता

एनआरटी का विकल्प पितृसत्ता के संदर्भ में विशेष रूप से उपयोगी है, जो मुख्य रूप से महिलाओं को उनकी प्रजनन क्षमता के संदर्भ में परिभाषित करता है जिसमें बच्चे के साथ आनुवंशिक तथा रक्त संबंध पर जोर दिया जाता है। प्रजनन को एक प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जिस पर तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से पुरुष नियंत्रण करते हैं। उन्हें पितृसत्ता को बढ़ावा देने तथा मातृत्व को नारीत्व के साथ जोड़ने के लिए दोषी ठहराया गया है, इस प्रकार संतानहीनता के लांछन के प्रश्न तथा विवाह से बच्चे के जन्म तक रैखिक प्रगति को लागू किया गया है। 'गर्भ धारण करने वाले बच्चों के नाम पर महिलाओं के शरीर को संवेदनाहीन, शल्य चिकित्सा द्वारा आक्रमण तथा घुसपैठ किया जाता है'। (कान, 2004: 363)

नारीवादी आलोचकों द्वारा एनआरटी को महिलाओं के शरीर के अंडे तथा गर्भ में लिंग–विखंडन के रूप में माना जाता है, जो महिलाओं को उनके शरीर को अलग करने योग्य भागों के रूप में बढ़ावा देकर अमानवीय तथा वस्तुनिष्ठ बनाता है जिसे मातृत्व बनाने के लिए जोड़ा तथा पुर्नसंयोजित किया जा सकता है। मां

बनने के लिए बेताब महिलाओं को प्रजनन तकनीकी प्रक्रियाओं का उपयोग करके ''पूर्ण'' बनने का मौका दिया जाता है।

11.4.2 प्रौद्योगिकी पर मांगलिकता की वृद्धि तथा नियंत्रण

एक सकारात्मक दृष्टिकोण यह है कि प्रजननीय तकनीक महिलाओं को घरेलू क्षेत्र में उनके निर्वासन को दूर करने में मदद कर रही है साथ ही उनकी प्रजनन क्षमताओं पर नियंत्रण भी सौंपा है – जैसे गर्भ धारण करना है, कब गर्भ धारण करना है और कैसे गर्भ धारण करना है।

एनआरटी का चयन करने वालों को सामाजिक कलंक को दूर करना होगा यदि उन्हें लगता है कि बच्चे को अपने समुदाय के सदस्य के रूप में स्वीकार करने के लिए यह आवश्यक हैं। क्योंकि कुछ व्यक्ति या सामाजिक समूह एनआरटी को कुछ शर्तों का उल्लंघन करने वाली तकनीक मान सकते हैं। वे शामिल दाता माता–पिता की पता लगाने योग्य संबंधितता तथा सामाजिक साख की अनिश्चितता और ऐसे व्यक्तियों को शामिल करने वाली तकनीक का उपयोग करके प्रजनन करने के लिए धर्म, नस्ल तथा जातीयता की कमी को अस्वीकार कर सकते हैं।

ऐसी तकनीक का उपयोग करने की उपयुक्तता के विषय में मिश्रित राय है। जबकि कुछ इस बात से सहमत हैं कि प्रौद्योगिकी उन लोगों के लिए मददगार है जो बच्चे पैदा करने में समस्याओं का सामना कर रहे हैं, दूसरों को लगता है कि प्रजनन तकनीकों का परिणाम मानव प्रजनन तथा प्रजनन के प्राकृतिक आधार को बदनाम करना है (कार्स्टन, 2000:11) साथ ही सांस्कृतिक तथा धार्मिक विश्वास आसपास के सामाजिक मानदंडों की जिम्मेदारी का प्रमाण है। जैसा कि रब्बियों का सामना करने वाली दुविधाओं तथा एनआरटी के विषय में इजराइल के मामले में देखा गया है।

11.4.3 'पसंद के अनुसार परिवार' के गठन की अनुमति देता है

प्रजननीय तकनीकों ने ''पसंद के परिवारों'' के गठन की अनुमति दी है – समान–लिंग, एकल पितृत्व आदि। पसंद से परिवार इस तथ्य का एक उदाहरण

है कि जीव विज्ञान नातेदारी की एकमात्र परिभाषित विशेषता नहीं है। रक्त तथा वैवाहिक संबंध साझा किए बिना लोग परिजन हो सकते हैं।

नातेदारी इन पारिवारिक संबंधों की विशेषता के लिए अपेक्षित प्रेम तथा स्थायी एकता पर आधारित है। इसके अतिरिक्त यह विषमलैंगिक पहचान के आधार पर प्रजनन के विचारों को भी नकारता है। परिवार को अब केवल प्रजनन की इकाई के रूप में नहीं देखा जाता है बल्कि यह एक गैर–प्रजनन इकाई हो सकती है।

इस तरह के पारिवारिक संबंध पसंद तथा प्रेम की विचारधारा पर आधारित होते हैं, साथ ही नातेदारी के जैविक प्रतिदर्श के विरूद्ध खड़े नज़र आते हैं। पसंद के परिवार नातेदारी के जैविक रूप से प्रतिरूपित विषमलैंगिक क्षेत्र पर सवाल उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में उभरे हैं, जो समलैंगिक महिलाओं तथा पुरुषों को सहायता और देखभाल प्रदान करने में विफल रहा है।

11.5 परिवार तथा नातेदारी पर नवीन प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के नकारात्मक प्रभाव

एनआरटी की उपयुक्तता के विषय में बहस के कारण, यह आश्वासन नहीं है कि उन्हें अपनाने वाले समाज के सभी सदस्यों द्वारा उन्हें अच्छी तरह से समझा जाएगा तथा सकारात्मक रूप से स्वीकार किया जाएगा। एनआरटी इसके उपयोग के नैतिक, सामाजिक तथा कानूनी परिणामों के विषय में विधायी बहस छेड़ रहा है (लेविन 2008: 381)।

प्रजनन तकनीकों का अनियंत्रित प्रसार गंभीर प्रश्न लाता है जो प्रजनन प्रौद्योगिकी की आदर्शता पर पुनर्विचार करने के लिए विवश करता है। इस तकनीक में मानव शरीर को बिक्री योग्य आर्थिक पूंजी के लिए वस्तुओं के रूप में मान कर तथा चिकित्सा पर्यटन का सहारा लेकर पूंजीवाद को बढ़ावा देने के लिए माना जाता है। इसका परिणाम एक अनैतिक लेकिन संपन्न 'प्रजनन उद्योग' में होता है जहां मानव प्रजनन अंग जैसे अंडे, शुक्राणु, गर्भाशय तथा डिंब को 'खरीदा', 'बेचा' या 'किराए पर' लिया जा सकता है (मारवाह, 2011)। यह कम आर्थिक पारितोषिक के पैमाने तथा प्रक्रियाओं की अनियमित आवृत्ति से स्वास्थ्य जोखिमों के माध्यम से दाताओं का शोषण करके स्वास्थ्य अधिकारों और लिंग की चिंताओं को खत्म करता है। इसका परिणाम उनके प्रजनन शरीर के दोनों

ग्राहकों के रूप में उनकी बांझपन के इलाज के लिए साथ ही दाताओं के रूप में दूसरों को बच्चे पैदा करने की सुविधा के रूप में होता है (पटेल, 2013: 69)। एनआरटी को उसकी समस्याओं के कारण तथा कम सफलता दर के कारण मिश्रित प्रतिक्रिया मिली है, विभिन्न देशों में पहुंच तथा निम्न सफलता दर।

एनआरटी मौजूदा समझ को बदल रहा है कि कैसे मातृत्व तथा पहचान क्रमशः माता और बच्चे को प्रदान की जाती है, प्रदूषण, गर्भाधान और मातृत्व के निर्धारण के संबंध में धार्मिक विश्वासों के लिए खतरा बनने की कीमत पर। पुराने, अपरिवर्तित, मानदंड जो नए नवाचारों तथा प्रक्रियाओं के लिए कोई व्यवस्था नहीं करते हैं, उन्हें जल्द से जल्द उन्नत किया जाना चाहिए। परंपरा तथा आधुनिकता के मध्य की प्रतियोगिता को सामने लाया जाता है साथ ही वर्तमान में इजराइल में प्रजनन के मामले में यह अनसुलझा है।

प्रजनन तकनीक से बच्चे पैदा करना नए सवाल खड़े कर रहा है:

- क्या प्रजनन का कोई सार्वभौमिक अर्थ है?
- संबंध क्या होता है
- क्या मौजूदा नातेदारी सिद्धांत परस्पर–सांस्कृतिक रूप से नातेदारी की प्रथाओं के विषय में सिद्धांत देने के लिए पर्याप्त हैं?

बोध प्रश्न 3

1. समाज के लिए नवीन प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) की कोई दो प्रासंगिकता बताइए

.....

.....

.....

2. **क्या आपको लगता है कि मानव प्रजनन के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग का कोई नकारात्मक परिणाम है? अपने उत्तर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

11.6 सारांश

इस इकाई में हमने नई प्रजनन तकनीक का अर्थ समझा तथा कैसे इसने पितृत्व की समझ को पुर्नपरिभाषित किया है। प्रजनन के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग ने मातृत्व तथा प्रसूति की पारंपरिक समझ को चुनौती दी है। हमने सीखा है कि एनआरटी ने प्रजनन के प्राकृतिककरण को जन्म दिया है, जिसका अर्थ है कि जन्म अब केवल एक जैविक प्रक्रिया नहीं है बल्कि कुछ ऐसा है जिसे हमने चिकित्सा प्रयोगशालाओं में बनाया है। हमने यह भी देखा है कि एनआरटी ने न केवल नातेदारी अध्ययन के दायरे का विस्तार किया है बल्कि महिलाओं की स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने महिलाओं को अधिक प्रजनन विकल्प दिए हैं और उन्हें जीव विज्ञान के जाल से बाहर आने की अनुमति दी है। प्रगति के बावजूद, प्रौद्योगिकी के उपयोग के कुछ नतीजे हैं तथा इसने सहायक प्रजनन के माध्यम से पैदा हुए बच्चों की पहचान के प्रश्न उत्पन्न किए हैं।

11.7 संदर्भ

1. कार्स्टन, जेनेट. (संस्करण) 2000, *कल्चर्स ऑफ रिलेटेडनेसः न्यू अप्रोच टू द स्टडी ऑफ किनशिप,* यूकेः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

2. ––––– *''कॉन्सट्यूटिव नॉलेजः ट्रेसिंग ट्रेजिक्टरिज ऑफ इन्फॉर्मेशन इन न्यू कॉन्टेक्सट ऑफ रिलेटेडनेस''* इन एंथ्रोपोलॉजी तिमाही वाल्यूम 80, नंबर 2 किनशिप एंड ग्लोबलाइजेशन (स्प्रिंग 2007) पृष्ठ 403–426।

3. होली, लादिस्लाव 1996. *एंथ्रोपोलॉजिकल प्रेस्पेक्टिव ऑन किनशिप,* लंदनः प्लूटो प्रेस।

4. काह्न, सुसान मार्था. 2004. *''एग्स् एंड वूम्बस्ः द ओरिजिन ऑफ ज्यूइसनेस''* रॉबर्ट पार्किन और लिंडा स्टोन (संपा0) में *किनशिप एंड फैमिलीः एन एन्थ्रोपोलॉजिकल रीडर,* यू.एस. ए.ः ब्लैकवेल पृ0 362–377।

5. लेविन, नैन्सी. 2008. *''ऑल्टरनेटिव किनशिप, मैरिज एंड रिपोडक्शन''* एन्यूल रिव्यू ऑफ एंथ्रोपोलॉजी में, वॉल्यूम 37 (2008) पृ0–375–389।

6. मारवाह, वृंदा और सरोजिनी एन. 2011. *''रीइन्वेंटिंग रिप्रोडक्शन, री–कॉन्सेविंग चैलेंजेजः एन एग्जामिनेशन ऑफ असिस्टेड रिप्रोडक्टिव टेक्नोलॉजीज इन इंडिया''*, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली में, वॉल्यूम 46, नंबर 43 (22–28 अक्टूबर)।

7. पटेल, तुलसी. 2013. *''असिस्टेड रिप्रोडक्टिव टेक्नोलॉजीज (एआरटी) एंड पब्लिक हेल्थः एक्सप्लोरिंग द ऑक्सिमोरोन''*, इंडियन एंथ्रोपोलॉजिस्ट में, वॉल्यूम 43, नंबर 1 (जनवरी–जून): 65–78।

8. श्नाइडर, आर. 1980. *अमेरिकन किनशिपः ए कल्चरल एकांउट,* शिकागोः शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

11.9 अपनी प्रगति की जाँच करें

1. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. प्रजननीय प्रौद्योगिकियां जैव प्रौद्योगिकी के विकास का परिणाम हैं। वे प्रजनन की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने, रोकने या हस्तक्षेप करने के उद्देश्य से प्रौद्योगिकियों का उल्लेख करते हैं जैसे कि गर्भनिरोधक, गर्भपात, प्रसवपूर्व परीक्षण, जन्म तकनीक तथा गर्भनिरोधक प्रौद्योगिकियां।

2. नवीन प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) अलग आनुवंशिक तथा गर्भकालीन मां के रूप में नामित करके इजराइल में मातृत्व की धारणा को बदल देता है ––– एक अंडे को निषेचित करने के लिए तथा दूसरा भ्रूण के लिए गर्भ प्रदान करता है।

बोध प्रश्न 2

1. इजराइल में, मातृत्व धार्मिक कानूनों के दायरे में रहता है क्योंकि यह न केवल नातेदारी के संदर्भ में, बल्कि धार्मिक समूह के भीतर किसी की सदस्यता और नागरिकता के अधिकार को भी परिभाषित करता है। यहूदीपन एक राष्ट्र से संबंधितता तथा नागरिकता के अधिग्रहण को निर्धारित करता है। नातेदारी की पहचान को मातृवंशीय रूप से परिभाषित किया जाता है, अगर बच्चे को वैधता प्रदान की जानी है तो मां की पहचान महत्वपूर्ण हो जाती है।

2. इजराइल में फर्टिलिटी क्लीनिकों के सामने दो चुनौतियाँ हैं:

अ. धार्मिक परिस्थितियों से बंधा मातृत्वः इजरायली समाज में एक उभरता हुआ अंतर्विरोध है, जो एक तरफ, समाज में महिलाओं की स्थिति के लिए परिभाषित कारक के रूप में मातृत्व को प्राथमिकता देता है तथा दूसरी तरफ हलाखिक कानूनों के दायरे में गर्भधारण की अपेक्षाओं को लागू करके संतान को वैध बनाने की शर्तें रखता है।

ब. पुराने धार्मिक कोड तथा रब्बियों की राय में मतभेदः पारंपरिक रब्बी कल्पना में अंडाणु के किसी भी संदर्भ का उल्लेख नहीं है। इस प्रकार, रब्बियों के लिए, मातृत्व का निर्धारण करने में किसी ऐसी चीज की व्याख्या करना शामिल है जो धार्मिक ग्रंथों के अनुसार मौजूद भी नहीं है। रब्बी अपनी स्वयं की व्याख्या तैयार करते हैं कि किसे माँ के रूप में पहचाना जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1. समाज के लिए नवीन प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) की दो प्रासंगिकताएं हैं:

अ) प्रौद्योगिकी को पितृसत्तात्मक के रूप में अस्वीकार करना।

ब) महिलाओं को स्वतंत्रता तथा प्रतिनिधित्व देता है।

2. मानव प्रजनन के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। इसने जैविक प्रक्रिया में एक मौद्रिक मूल्य जोड़ा है साथ ही इसने अमीर और गरीब के बीच विभाजन पैदा किया है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाएं सरोगेसी के व्यावसायीकरण की शिकार हो गई हैं।